International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 8 Issue 5, September-October, 2020, Impact Factor: 5.246

माध्यमिक स्तर पर लखनऊ के विद्यार्थियों की सृजनशीलता का शैक्षिक उपलब्धि से तुलनात्मक अध्ययन

राजेश सिंह[1], डॉ. मोहिनी तिवारी[2]

[1]शोधार्थी, शिक्षा विभाग, राधा गोविन्द विश्वविद्यालय, रामगढ़ए झारखण्ड
[2]शोध निर्देशक, प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, राधा गोविन्द विश्वविद्यालय, रामगढ़, झारखण्ड

प्रस्तावना

भाोध अध्ययन की पृश्ठभूमि :–
सूचना क्रांति के इस युग में शिक्षा तथा भौक्षिक प्रक्रिया, दोनों के अर्थ बदल रहे हैं। सनातन काल से ही शिक्षा का लक्ष्य मानव का निर्माण रहा है। मानव निर्माण का अर्थ है–मानव तथा उसके लघु संस्करण (बालक) में निहित मूलभूत गुणों का समाज सम्मत दिशा में विकास जिससे व्यक्ति का भी कल्याण हो और समाज का भी कल्याण हो। आधुनिक विकासशील युग में नित् नवीन परिवर्तन हो रहे है। परिणामस्वरूप हमारा जीवन व्यापक व जटिल होता जा रहा है। वर्तमान में वैज्ञानिक प्रगति का आधार शिक्षा है। शिक्षा वह स्तम्भ है, जिससे मानव समाज आज चरम पर पहुँच गया है। शिक्षा भाब्द का तात्पर्य अधिगम, अध्ययन, ज्ञानभिग्रहण एवं किसी कार्य को करने में निपुण होने की कामना से है। किसी भी क्षेत्र में अग्रसर होने की स्पर्धा एवं उत्सुकता ही भौक्षिक अवधारणा के उन्नयन का मूल है।

पुश्पों की खुशबू हवाओ के झोकों के साथ फैलती है। जिधर हवा जाती है उधर ही महक भी फैलती है। उसका दायरा सीमित रहता है, हवा के रूख पर निर्भर करता है। परन्तु मनूश्य की शिक्षा, उसका ज्ञान, उसका योगदान चारों दिशाआं में फैलता है। वह अपने ही परिवार या समाज में नहीं अपितु सम्पूर्ण जगत में सम्मान एवं प्रतिश्ठा प्राप्त करता है। यह तभी सम्भव होता है जब वह अच्छी शिक्षा प्राप्त कर सके, सुयोग्य गुरूओं की संगति में रहा हो, अच्छे संस्कारों को आत्मसात किया हो, नीतियों एवं आदर्शो को अपने व्यक्तित्व का अंग बनाया हो, मानव कल्याण लक्ष रहा हो, और अपने ज्ञान का समाज में प्रसारित किया हो। वही मनुश्य आगे चलकर महान, युगपुरुश एवं जनॉकाक्षाओं का प्रतिनिधि बनता है। शिक्षा एवं संस्कार विहीन व्यक्ति मनुश्य नहीं बन पाता है। वह आत्मकेन्द्रित होकर रह जाता है।

भूमिका

शिक्षा प्रकाश का वह स्त्रोत है, जिसके जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में पथ प्रदर्शन होता है।

जॉन डिवी के अनुसार – ''शिक्षा भावी जीवन की तैयारी मात्र नहीं है, वरन जीवन यापन की प्रकिया है।''
काण्ट के अनुसार – ''शिक्षा व्यक्ति की उस पूर्णता का विकास है जिस पर वह पहुँच सकता है।''

प्रो0 ड्रीवर के अनुसार–''शिखा एक प्रकिया है जिसमें तथा जिसके द्वारा व्यक्ति के ज्ञान,

अध्ययन की आवश्यकता :
शिक्षा और शिक्षण की प्रकिया में मानव व्यवहार के विभिन्न पक्षों का अध्ययन एक आवश्यक भाग रहा है मानव व्यवहारों को समझने एवं उनका भविष्य कथन करने में व्यक्तित्व के विभिन्न घटकों की महती भूमिका रही है।

प्रस्तुत शोध में विद्यार्थियों के सृजनशीलता, समायोजन–क्षमता तथा अध्ययन आदत का शैक्षिक निष्पत्ति से क्या सम्बंध है इसको समस्या के रूप में लिया गया है जिसकी वर्तमान समय में महत्वपूर्ण आवश्यकता है।

शैक्षिक निष्पत्ति को प्रभावित करने वाला पहला कारक सृजनशीलता है। वर्तमान युग में सृजनशीलता का जो महत्व है वह सर्वविदित है। किसी व्यक्ति को वास्तविक रूप में सृजनशील उस समय कहा जा सकता है जब उसके कार्य में कुछ नवीनता एवं मौलिकता हो। प्रायः यह धारणा लोगों में बनी हुई है कि समाज के कुछ विशिष्ट वर्गों जैसे–अभिनेता, लेखक, कवि, चित्रकार, वैज्ञानिक आदि में सृजनशीलता अधिक होती है। परन्तु आधुनिक मनोवैज्ञानिकों के अनुसार सभी व्यक्तियों में कुछ सीमा तक यह गुण पाया जाता है और सृजनात्मकता की मांग सभी व्यक्तियों में भिन्न–भिन्न पायी जाती है। अर्थात जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सृजनशील व्यक्ति होते हैं किन्तु यह भी आवश्यक नहीं है कि एक क्षेत्र में सृजनशील व्यक्ति अन्य क्षेत्रों में भी उतना ही सृजनशील हो।

टोरेन्स महोदय के अनुसार'– बालकों में सृजनशीलता की माप निम्नलिखित कारणों से आवश्यक है–

1. बालकों में सृजनात्मक व्यवहार की माप हमारे मन और व्यक्तित्व सम्बन्धी समझ में वृद्धि कर देती है।
2. बालकों की सृजनशीलता की माप व्यक्तिगत शिक्षण में सहायक होती है।
3. सृजनशीलता की माप मानसिक वृद्धि के निर्देशन में सहायक होती है, मानसिक स्वास्थ्य के स्तर का संकेत देती है एवं सुधारात्मक कार्यक्रमों का आयोजन करने के सम्बंध में सूत्र प्रदान करा देती है।
4. बालकों में सृजनात्मक व्यवहार का माप कार्यक्रम, पदार्थों एवं प्रविधियों के मूल्यांकन में सहायक होती है।
5. विद्यार्थियों में सजनात्मक व्यवहार की माप वृद्धि करने की क्षमता को प्रबल करती है तथा भविष्य में निर्देशन की आवश्यकता प्रस्तुत करती है।

अध्ययन का महत्व :

माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थी आज अनेक प्रकार की समस्याओं से ग्रस्त है। उनकी ये समस्याऐं कुसमायोजन, मानसिक अस्वस्थता, तनाव, कुण्ठा आदि के रूप में दृष्टिगोचर होती है। ये समस्याएँ विद्यार्थियों के व्यवहार, आचरण और शैशिक्षक विकास आदि को प्रकावित करती है जिससे उनका वैयक्तिक और समाजिक विकास नहीं हो पाता है क्योंकि माध्यमिक स्तर का विद्यार्थी किशोरावस्था की दहलीज पर होता है। उसमें समायोजन की समस्या बनी रहती है, ऐसे में वह अपने संवेगों को उचित अभिव्यक्ति देने का प्रयास करता है जिससे प्रतिकूल परिस्थितियों में उनमें निराशा उतपन्न होती है जो कि व्यवहार में एक विशेष प्रकार की असामान्यता को दर्शाता है।

सृजनशीलता के कारक :–

जहाँ कार्य है, वहाँ कारण अवश्यसंभावी है। बिना किसी कारण अथवा कारक के किसी भी कार्य का सम्पादन सम्भव नहीं है। सृजनात्मकता के विभिन्न परिभाषाओं के अवलोकन तथा विशेषण से स्पष्ट है कि सृजनशीलता को संवेदनशीलता जिज्ञासा, कल्पना, मौलिकता, खोजपरकता, लचीलापन, प्रवाह, विस्तृतता, नवीनता आदि के संदर्भ में समझा जा सकता है। सृजनशीलता के समानार्थी यह सभी प्रत्यय वैज्ञानिकों, अनुसंधानों, कलाकृतियों, संगीत, रचना, लेखन व काव्य कला, चित्रकला, भवन–निर्माण या किसी प्रकार के रचनात्मक, मौलिकता एवं निर्माण के कार्यों में परिलक्षित होते है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में बॉकर मेंहदी के सृजनात्मक परीक्षण का प्रयोग किया गया है। जो प्रवाह, लचनीयता व मौलिकता का ही मापन करता है। इसलिए इन्हीं तीनों कारकों का विस्तृत वर्णन किया जा रहा है।

1. प्रवाह :–

सृजनशीलता के प्रवाह से तात्पर्य किसी दी गयी समस्या पर अधिकाधिक प्रत्युत्तरों से है। वैसे प्रवाह को चार भागों में बांटा जाता है– वैचारिक प्रवाह, अभिव्यक्ति प्रवाह, साहचर्य प्रवाह, शब्द प्रवाह। वैचारिक प्रवाह के अन्तर्गत विचारों के स्वतंत्र प्रस्फटन के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। जैसे– किसी कहानी के शीर्षक बताना, किसी वस्तु के अनेक उपयोग बताना तथा किसी वस्तु के सुधारने के विभिन्न तरीकों को बताना आदि।

साहचर्य प्रवाह से तात्पर्य दिये गये शब्दों या वस्तुओं में साहचर्य स्थापित करना है। दिये गये शब्दों में साहचर्य सम्बन्ध से बच्चों को तथ्य की समुचित जानकारी हो जाती है। जैसे–दिये गये शब्दों के पर्यायवाची अथवा विलोम शब्द लिखना इस साहचर्य सम्बन्ध से बच्चों की भाषा एवं अभिव्यक्ति दोनों विकसित होती है।

2. लचीलापन :–

सृजनशीलता के लिए लचीलेपन का गुण होना अनिवार्य है क्योंकि इसके अभाव में व्यक्ति विभिन्न परिस्थितियों में अनुकूलन स्थापित नहीं कर पाता और यदि हर परिस्थितियों में समायोजन नहीं कर पाता तो उसका विकास बाधित होता है।

कठोर तथा जिद्दी स्वभाव विकास में बाधक होते है। इसलिए अध्यापकों का यह कर्तव्य होता है कि बालको के स्वभाव में लचीलापन का विकास करे जिससे वह सभी परिस्थितियों मे स्वाभाविक रूप से समायोजित हो सकें।

इस प्रकार लचीलापन सृजनशीलता का महत्वपूर्ण कारक है। इसके द्वारा बालकों का यथासम्भव विकास होता है।

3. मौलिकता :

सृजनात्मकता के लिए मौलिकता का होना नितांत आवश्यक है। मौलिकता के बिना व्यक्ति का विकास सम्भव नहीं है। बालकों की शिक्षा में मौलिकता समाहित होने पर ही विद्यार्थियों का सम्यक रूप से विकास हो पाता है। मौलिक चिन्तन के

माध्यम से ही विद्यार्थियों में विषयों के प्रति विशेष अभिरूचि जागृत होती है और इसी अभिरूचि के कारण विद्यार्थी पूर्णतः विकास कर पाता है। मौलिक प्रवृत्तियों के विद्यार्थी के मन–मस्तिष्क पर व्यापक प्रभाव पड़ता है।

मौलिकता से अभिप्राय व्यक्ति द्वारा प्रस्तुत किये गये विकल्पों या उत्तरों के अप्रचलित या असामान्य होने से है। दूसरे शब्दों में मौलिकता नवीनता से सम्बन्धित होती है जो व्यक्ति अपने विचार अन्य लोगों से हटकर प्रस्तुत करता है वह मौलिक कहा जाता है। वस्तुओं के नये उपयोग बताना, कहानी, कविता या लेख के शीर्षक लिखना, परिवर्तनों के दूरगामी परिणाम बताना नवीन प्रतीक खोजना आदि मौलिकता के प्रमुख उदाहरण है। मौलिकता के द्वारा ही नवीन आविष्कार अथना खोज सम्भव हो पाती है। जीवन में हर क्षेत्र में मौलिकता की प्रमुख आवश्यकता होती है और मौलिकता के द्वारा ही नवनिर्माण अथवा सृजन का कार्य सम्भव है।

समायोजन क्षमता :

व्यक्ति को सफल जीवन व्यतीत करने के लिए, अपने वातावरण एवं परिस्थितियों के साथ समायोजन स्थापित करना आवश्यक हो जाता है। समायोजन को सामंजस्य, व्यवस्थापन या अनुकूलन भी कहते है। समायोजन दो शब्दों को मिलाकर बना है – सम्टआयोजन । सम् का अर्थ है भली–भॉति, अच्छी तरह का समान रूप से और आयोजन का अर्थ है व्यवस्था अर्थात् अच्छी तरह व्यवस्था करना। अतएव समायोजन का अर्थ हुआ अच्छे ढंग से परिस्थितियों को अनुकूल बनाने की प्रक्रिया जिससे कि व्यक्ति की आवश्यकताएँ पूरी हो जाएँ तथा मानसिक द्वन्द न उत्पन्न होने पाये।

समायोजन मुख्यतः 3 बातों पर निर्भर करता है :–

1. व्यक्ति की इच्छाओं, विचारो, प्रेरणाओं और लक्ष्यों आदि में जितना अधिक समन्वय होता है, समायोजन उतना ही अच्छा होता है। यदि आवश्यकता से कम समन्वय है, तो समायोजन दुर्बल होगा।
2. व्यक्ति की इच्छाओं, विचारों, प्रेरणाओं और लक्ष्यों आदि की पूर्ति किस मात्रा और किस रूप में हुई है? पूर्ति जितनी अधिक मात्रा में होगी, समायोजन उतना ही अच्छा हागा।
3. व्यक्ति की इच्छाएं, विचार और लक्ष्य आदि सामाजिक मूल्यों से कहाँ तक मेल खाते हैं? मेल जितना अधिक होगा, समायोजन उतना ही अच्छा होगा।

भौक्षिक निश्पत्ति : –

शिक्षा के क्षेत्र में जो ज्ञान अर्जित किया जाता है उसे ही शैक्षिक निष्पत्ति कहते हैं। व्यक्ति अपने जीवन में अनेक प्रकार का ज्ञान तथा कौशल प्राप्त करता है। इस ज्ञान तथा कौशल में कितनी दक्षता व्यक्ति ने प्राप्त की है, इसका पता उस ज्ञान तथा कौशल के निष्पत्ति परीक्षण से चलता है।

हर व्यक्ति को जो शिक्षा से जुड़े रहते हैं अपनी शैक्षिक निष्पत्ति जानने की जिज्ञासा रहती है। शैक्षिक निष्पत्ति अच्छी होने पर कार्य में गुणवत्ता आती है तथा कार्य के प्रति उत्साह बढ़ता है, इसके विपरीत खराब शैक्षिक निष्पत्ति होने पर व्यक्ति को कार्य के प्रति हतोत्साहित होना पड़ता है।

विद्यालय में विभिन्न कक्षाओं में विद्यार्थी साल भर विभिन्न विषयों का ज्ञान प्राप्त करते है। कक्षा के सभी विद्यार्थियों का ज्ञान तथा ज्ञानार्जन करने की सीमा या प्रगति एक समान नहीं सोती है। किसी कक्षा विशेष में विद्यार्थियों ने कितनी मात्रा में ज्ञानार्जन या प्रगति की है इसकी जाँच करना आवश्यक होता है। इसकी जाँच जिस परीक्षा द्वारा की जाती है उसे ही उपलब्धि परीक्षा कहते हैं। विद्यार्थी का अंकपत्र ही उस विद्यार्थी की शैक्षिक निष्पत्ति को प्रदर्थित करता है। अतः हम कह सकते है कि 'उपलब्धि परीक्षाएँ' वे परीक्षाएँ है, जिनकी सहायता से विद्यालय में पढ़ाये जाने वाले विषयों और सिखाई जाने वाली कुशलताओं में छात्रों की सफलता या उपब्धि का ज्ञान प्राप्त किया जाता है। इसके अर्थ को स्पष्ट करने वाली परिभाषायें इस प्रकार है –

1. **प्रेसी, रॉबिन्सन व हॉरक्स के अनुसार**–''उपलब्धि –परीक्षाओं का निर्माण मुख्य रूप से छात्रों के सीखने के स्वरूप और सीमा का माप करने के लिए किया जाता है।''

2. **गैरीसन व अन्य** –''उपलब्धि –परीक्षा बालक की वर्तमान योग्यता या किसी विशिष्ट विषय के क्षेत्र में उनके ज्ञान की सीमा का मूल्यांकन करती है।''

3. **इबेल**–''उपलब्धि परीक्षण यह अभिकल्प है जो विद्यार्थी के द्वारा ग्रहण किये गये ज्ञान, कुशलता या क्षमता का मापन करता है।''

4. **थार्नडाइक व हेगन**–''जब हम उपलब्धि परीक्षा का प्रयोग करते है तब हम इस बात का निश्चत करना चाहते हैं कि एक विशिष्ट प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त व्यक्ति ने क्या सीखा है।''

उपर्युक्त परिभाषाओं को देखते हुए हम कह सकते हैं कि उपलब्धि परीक्षायें वे परीक्षा हैं जिनकी सहायता से विद्यालयों में पढ़ाये जाने वाले विषयों तथा सिखायी जाने वाली कुशलताओं में विद्यार्थियों की सफलता या निष्पत्ति का ज्ञान प्राप्त किया जाता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. सिंह गीता एण्ड सिंह वी.पी. (1994): रिलेशनसिप बिट्वीन लेवल आफ एस्पिरेशन एडजस्टमेन्ट एण्ड स्कूलास्टिक अरेंजमेन्ट आफ हाईस्कूल स्टूडेन्ट्स, पूर्वांचल जर्नल आफ एजूकेशनल स्टडीज, वैल्यूम–4, पृ. 30–33.
2. सिंह नरेन्द्र कुमार (2007):''उच्च तथा निम्न सृजनशील छात्राध्यापकों के कक्षा शिक्षण व्यवहार का तुलनात्मक ङ्केअध्ययनाश भारतीय शिक्षा शोध–पत्रिका वर्ष 26 अंक–1 जनवरी–जून 2007
3. सिंह भूदेव (1980): रिलेशनसिप बिटविन मैथमेटिकल क्रियेटिविटी एण्ड सम बायोग्राफिक्स फैक्टर्स, इण्डियन एजूकेशनल रिब्यू, ए रिसर्च जर्नल ग्ग्प्प्;2) सिंह रणविजय (2007)
4. सिंह रणविजय (2007):''उच्च समायोजित तथा निम्न समायोजित विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति का तुलनात्मक अध्ययनष शोध पत्र, न्यूडाइमेंसन्स इन एजूकेशनल रिसर्च वाल्यूम–टप, दिस. 2007, पृ. 75–76
5. सेण्टवर्जिल सेल्जबर्ग (2009): फिफ्थ एजूकेशन मीडिया कान्फ्रेन्स 2009 आस्ट्रिया
6. सैजादी बाफगी एस.एच. (2007):' सैक्स एण्ड ग्रेड डिफरेन्स इन वर्बल क्रियेटिव
7. थिंकिंग एमंग ईरानीयन मिडिल स्कूलष चिल्ड्रेन. सॉइकोरिर्पोट 100 पृ. 759–76
8. श्रीवास्तव (1972): सृजनात्मक योग्यता तथा सामाजिक आर्थिक स्तर और संस्कृत के सम्बन्ध में अध्ययन, पी–एच.डी. राज. यूनि.
9. श्रीवास्तव एन. (1980): हाईस्कूल के विद्यार्थियों के समायोजन की शैक्षिक सम्प्राप्ति हेतु बुद्धि, रूचि और पारिवारिक स्तर के द्वारा पूर्वानुमान करना, पी–एच.डी. शिक्षाशास्त्र, गोरखपुर विश्वविद्यालय, थर्ड सर्वे इन एजूकेशन
10. श्रीवास्तव एस.एस. (1977): स्टडी ऑफ क्रियेटीविटी इन रिलेशनशिप टू न्यूरोटिरिज्म एण्ड एक्स्ट्रा इन हाईस्कूल स्टूडेन्ट्स
11. हैरिसन विलियम (1976): ''अ स्टडी ऑफ एडजस्टमेंट आन यूनिवर्सिटी स्टूडेन्ट्स'' (फिफ्थ एडीसन) एन.जे.
12. त्रिपाठी नीलम (2007): सृजनात्मक, अध्ययन आदतों एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा से सम्बन्ध का अध्ययन, पी–एच. डी. इन एजू. डॉ. राममनोहर लोहिया अवध वि.वि. फैजाबाद, (उ.प्र.)